ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—07/09/2020   कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

(रामस्वरूप चुप!)

उमा : जी हाँ, कालेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँक कर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए...मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ (बेंत

ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी.ए. पास? उफ़्फ़ोह! गजब हो जाता ! झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ बेटे, चलो...

(दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइये। लेकिन जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं- यानी बैकबोन, बैकबोन !

(बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रूलासापन।

दोनों बाहर चले जाते हैं।बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा, उमा...रो रही है।

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी, मक्खन...

(सब रतन की तरफ़ देखते हैं और परदा गिरता है।)

****

<u>छात्र कार्य-दी गई पाठ्य सामग्री का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें ।</u>

<u>धन्यवाद</u>

<u>कुमारी पिंकी “कुसुम”</u>

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲